PERSPECTIVES OF HUMANITIES, LANGUAGES AND METHODOLOGY

BA HINDI

IV SEMESTER

CORE COURSE

(2011 Admission)

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION
CALICUT UNIVERSITY P.O., THENJIPALAM, MALAPPURAM, KERALA-679 635.

176

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

STUDY MATERIAL

B.A. HINDI
IV SEMESTER
CORE COURSE
PERSPECTIVES OF HUMANITIES, LANGUAGES AND METHODOLOGY

Lessons prepared by:

Module I & II — Dr.Ranjith .M.,
Assistant Professor
Dept. of Hindi,
M.E.S. Asmabi College,
P. Vemballur P.O.
Kodungallur-680 671.

Module III & IV — Dr. C. Shibi
Assistant Professor
Department of Hindi
Carmel College, Mala
Thrissur

Scrutinised By:

Dr.Pavoor Sasheendran,
38/1294, 'Appughar',
Edakkad P.O.,
Calicut-5

Lay out & Settings
Computer Section, SDE

©
Reserved

Module I and II

भाषा आद्यंत प्रविधि

पुस्तक के पहले दो अध्यायों में सृजन में मानविकी की भूमिका, भाषा संस्कृति और पहचान पर विचार विमर्श किया गया है.

Unit I

1. **यूनानी शास्त्रीय विचारधारा के अनुसार नागरिकों को ---- प्रदानकरना मानविकी है.**
   व्यापकशिक्षा
2. **मानविकी शब्द का प्रयोग सबसे पहले कब हुआ ?**
   इतालवी पुनर्जागरण काल में
3. **जीवन में कितने प्रकार के अनुभव होते है ?**
   दो
4. **'गोदान' किस की रचना है ?**
   प्रेमचंद की
5. **' मैलाआँचल ' किसकी रचनाहै ?**
   फणीश्वरनाथरेनुकी
6. **'गोदान ' का प्रतिनिधि चरित्र कौन है ?**
   होरी
7. **नाटक --- कला में आता है .**
   दृश्यकला
8. **पूर्वानुमानों की जांच किस पद्धति में की जाती है ?**
   वैज्ञानिक पद्धति में
9. **विज्ञान का लक्ष्य --- तक पहूंचना है**
   परमसत्य
10. **परिकल्पनाओं का खंडन किस पद्धति में होता है ?**
    वैज्ञानिक पद्धति में
11. **बाहरी प्राकृतिक विश्व का वैज्ञानिक अध्ययन को क्या कहते है ?**
    प्राकृतिक विज्ञान
12. **आधुनिक विज्ञान का विकास कब हुआ ?**
    सत्रहवी शताब्दी के उत्तरार्धमें
13. **शक्ति और ज्ञान के क्षेत्र में सर्वाधिक विश्वसनीय विधा क्या है ?**
    आधुनिकविज्ञान
14. **नृतत्व शास्त्र किस विज्ञान के अन्तरगत आते है ?**
    सामाजिक विज्ञान के

15. **सत्य के संधान का सबसे प्रामाणि कदा वा कौन करता है ?**
    विज्ञान
16. **सामाजिक विज्ञान का संबंध --- से है**
    सामजिक पर्यावरण से
17. **मानव की अवस्था के समग्रतापूर्ण अध्ययन --- कह लाती है**
    मान्वीकी
18. **मान्वीकी में किन बातों पर जोर देता है ?**
    विश्लेष्ण और विचारों के आदान –प्रदान पर
19. **दुसरे लोगों ने जीवन कैसे जिया, इसकी जानकारी हमें कौन देती है ?**
    मान्वीकी
20. **वास्तविक और अवास्तविक ज्ञान के प्रकारों का संयोग --- है**
    दर्शन शास्त्र
21. **तर्क पर आश्रित एक विधा ---- है**
    दर्शनशास्त्र
22. **प्रकृति और समाज का अध्ययन -- है**
    भिन्न
23. **वैज्ञानिक पद्धतियों का लक्ष्य क्या है ?**
    परमसत्य को ढूंढना
24. **यह आमपारपरिक शास्त्रीय धारणा है कि ----ज्ञानसटीक होता है.**
    वैज्ञानिक
25. **मान्वीकी ---- मूल्यों से सम्बन्धित है.**
    मानवीय
26. **'तथ्य' शब्दमूलत: किस भाषा का है ?**
    लैटिन
27. **' तथ्य' किस शब्द से निकला हुआ शब्द है ?**
    फैक्ट्स
28. **'व्हाटइसहिस्टरी ' किसकी रचना है ?**
    ई.एच .कार
29. **वस्तुपरकता और सत्य का प्रश्न --- की खोज की प्रक्रिया का अविभाज्य अंग है**
    तथ्योंकी
30. **विभिन्न वैज्ञानिक विधा अपनी विषयवस्तु -----के रूप में प्रस्तुत करते है .**
    तथ्य

31. **इतिहास ----का अध्ययन है**
    अतीत या भूतकाल का
32. **"आरंभ में इतिहासकार तथ्यों का सामयिकतौर पर चुनाव करता है ".यह कथन किस का है ?**
    ई.एच.कौर
33. **इतिहासकार- --का अंग होता है**
    वर्तमान का
34. **---- से विहीन इतिहासकार बिना जद का होता है.**
    तथ्यों से
35. **अतीत और वर्तमान के बीच के अंतहीन संवाद को क्या कहते है ?**
    इतिहास
36. **फ्रांसीसी विद्रोह के पहले इतिहास लेखन को क्या मानते थे ?**
    साहित्यिक कला
37. **'टोपिक्स ऑफ़ डिस्कोर्स: एस्सेय्स इन कल्तुर्लक्रितिसिस्म ' किसकी रचना है ?**
    हेडन वाईट
38. **सच्चाई की शाब्दिक ताज्वीर पेशकरने keliye इतिहासकार --- की सहायता लेते है**
    किस्सागोई की
39. **इतिहासकार --- से प्रभावित होकर लिखते है**
    युगबोध से
40. **इतिहास कौनसी प्रक्रिया है ?**
    अंत : संबंधों की समग्र
41. **मानविकी मनुष्यों की --- से सारोबार है.**
    रचनात्मक कल्पनाशीलता से
42. **साहित्य को वास्तविक विश्व का कलात्मक प्रतिनिधित्व मानने से इनकार करनेवाला आचार्य कौन था ?**
    प्लातो
43. **प्लातो के एक अनुयायी का नाम लिखिए.**
    अरस्तु
44. **"किसी साहित्यिक लेखन का महत्व उसकी आनंद प्रदान करने की क्षमता के अनुसार निर्धारित होना चाहिए "यह कथन किसका है ?**
    दविड़हूम
45. **समाज शास्त्र का जनक कौन है ?**
    अगस्त डी कॉम्ते

46. **समाज शास्त्र को वैज्ञानिक विधा के रूप में उभारने की कोशिश किसने की ?**
    इमाइल दुर्खिम
47. **समाज का निर्माण किसका परिणाम है ?**
    मानवीय संबंधों का
48. **मनुष्य --- प्राणी है.**
    सांस्कृतिक प्राणी
49. **ज़्यादा स्वीकृत ,वैधानिक और उचित रुचियाँ को क्या कहते है ?**
    प्रभावशाली रुचियाँ
50. **सामाजिक विज्ञान रुचियों का अध्ययन किस के रूप में करता है ?**
    सामाजिक घटना के रूप में

Unit 2

51. **सामजिक विज्ञान को ' मूल्यंसेआज़ादी 'आशय किसने दी ?**
मैक्स बेवर
52. **रुचियों किसे संबंधित है ?**
मूल्यों से
53. **मानवीय आस्थावों के समुच्चय को क्या कहते है ?**
मूल्य
54. **मूल्य ---का आत्मसातीकरण है**
व्यवस्था का
55. **सामाजिक स्वीकृति की विचारधारा किन से संबंधित है ?**
पुरस्कार और दंड मूल्यों से
56. **एशियाई समाज में ---- गहराई में धंसी है**
पितृसत्ता
57. **कौनसी तन्त्र आम लोगों की चेतना को प्रभावित करता है ?**
धार्मिकतन्त्र
58. **विचारों के समुच्चय को क्या कहते है ?**
विचारधारा
59. **'विचारधारा ' शब्द की खोज किसने की थी?**
देस्तातडी ट्रेसी ने
60. **विचारधारा शब्द का पर्यायरूप लिखिए**
मिथ्या चेतना
61. **'डी जर्मन ऐदिओलोजि ' किसकी रचना है ?**
मार्क्स और अन्गेल्स का
62. **"विचारधारा सापेक्षिक रूपसे स्वायत्त होतीहै " यह कथन किसका है ?**
लूई अल्थूसर
63. **विचारधारा --- का खंटित प्रतिनिथित्व नहीं करती**
यथार्थ का
64. **---- सामाजिक सृजन के साथ जुडी है**
साहित्यिक विधाएं
65. **जान बी थामसन कौन था ?**
मीडिया सिद्धांतकार
66. **तेरी इगाल्त्न किस विचारधारा से प्रभावित था ?**
मार्क्सवाद से

67. **मूल्यों का विनिमय किस के बीचहोता है ?**
समाज या व्यक्ति समूहों के बीच
68. **नैतिक विचारों के समुच्चय को क्या कहते है ?**
नैतिक मूल्य
69. **रुचियों केसंरचनात्मक निर्माण में महत्व पोर्ण भूमिका निभाने वाला कौन है?**
सामजिक वर्ग
70. **एशियाई समाज और पशिमी समाज का मुख्या अंतर क्या है ?**
एशियाई समाज पित्रसत्तात्मक है
71. **मनुष्य ---- प्राणी है**
सांस्कृतिक प्राणी
72. **भाषा किसका माध्यम है ?**
सम्प्रेष्ण का
73. **किसी व्यक्ति की वैश्विक दृष्टि के निर्माण में कौन भूमि का निभाते हैं?**
भाषा
74. **संगीत किस भाषा का उदाहरण है ?**
मौखिक भाषा का
75. **------ हमारे लिये अर्थों का समुच्चय रखते है**
भाषा
76. **सिनेमा किस भाषा का उदाहरण है?**
दृश्य भाषा का
77. **भाषा किस पर आधारित सामजिक व्यस्था है ?**
भिन्नातावों पर आधारित
78. **शब्दों की पुनरावृति ही ---- और पहचान की केन्द्रीयता है .**
भाषा
79. **---- भाषा की साझेदारी है**
अर्थ
80. **विषयनिष्ठता क्या है ?**
किसी भी व्यक्ति की वैश्विक समझ उसकी विषय निष्ठता है .
81. **भाषा के दो अवयव क्या – क्या है ?**
नियम और अभिव्यक्ति और बातचीत का वास्तविक तरीका
82. **फद्रीनांडडीसासूर कौन था ?**
स्विस भाषाविद
83. **संस्कृति की क्रियाशीलता किसके माध्यम से संभव होते है ?**
भाषा के माध्यम से
84. **मनुष्य की पहचान की विशेषता क्या है ?**
मनुष्य की पहचान बहुरंगी है

85. एतिहासिक तथ्य और अतीत किसके माध्यम से उद्घाटित हो जाते है ?
भाषा के

86. 'हरिजन' के सम्पादक कौन था ?
महात्मागाँधीजी

87. बीसवीं सदी के समाजों का मुख्या लक्षण क्या है ?
बहुभाषावाद

88. सेमेटिक भाषाओं का उद्भव कब हुई ?
रबसेदोहज़ारईसापूर्व

89. भाषाएँ किस के साथ प्रगति की ?
समय के साथ

90. हमारी अस्मिता की निर्माण करनेवाला कौन है ?
भाषाएँ

91. भाषा एक -----घटना है
सामाजिक

92. सामजिकसंरचना शब्दकाप्रयोगसबसेपहलेकिसनेकियाथा ?
पीटरबेर्जेरऔरथामसलुकमानने

93. हमें समाज से ज्ञान कैसे मिलते है ?
सामजिक व्यवहार से

94. गांधीजीने 'हरिजन ' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया था ?
इश्वर के लोग के अर्थ में

95. भाषाओं और संस्कृतियों के विशेषग्य को क्या कहते है ?
प्राच्यवादी

96. स्थानीय बच्चे अपनी संस्कृति से वंचित रहने का कारण क्या है ?
अंग्रेजी शिक्षा के कारण

97. क्न्थापुरा किस विधा की रचना है ?
उपन्यास

98. भाषा का -- से गहरा जुड़ाव है
संस्कृतिसे

99. राममनोहरलोहया द्वारा संचालित आन्दोलन का नाम लिखिए
अंग्रेजी हटाओ मातृभाषा लाओ

100. किस की कटाराष्ट्र विकास में पीच्चे रह जायेंगे ?
मातृभाषासे

101. औपनिवेशिक भाषा दमन की भाषा नहीं है, यह किसका कथन है ?
सलमानरुश्दी का

102. हिन्दू गाथामें रामकथा गायन के लिए कौनसी शाखा को अपनाया गया है ?
महाकाव्य शाखा को

103. **"भाषा अपने आपमें कोई चीज़ नहीं है, अगर वह संदेश को सम्प्रेषित नहीं** karti **" यह कथन किसका है ?**
अज्ञेय का

104. **'अनुकरण पर विचारकरनेवाले आचार्य कौन –कौन थे ?**
प्लातो और अरस्तु

105. **अनुकरण के प्रभाव को क्या कहते है ?**
भाव विरेचन

106. **अनुकरण ----- का सीधा निरूपण है**
यथार्थका

107. **"कवी का काम सिर्फ यथार्थ का वर्णन करना नहीं है "यह कथन किसका है ?**
अरस्तु

108. **---- यथार्थ का परोक्ष वर्णन है**
डायजेसिस

109. **वास्तविकताओं को हमारे मस्तिष्क तक पहुँचाने केलिए किनकिन की ज़रूरत होती है ?**
भाषा और शब्द कोश की

110. **सामाजिक व्यवहार किस पर आधृत है ?**
अस्मितापर

111. **------ में दुनिया का ऐसा वर्णन करता है जैसे वह सच हो**
उपन्यासमें

Unit 3

एकवाक्यमेंउत्तर लिखिए

१. यूनानी विचारधारा के अनुसार मानविकी क्या है ?

नागरिकों को व्यापक शिक्षा प्रदान करना मानविकी है.

२. मानविकी में जीवन के कौन -कौन रहस्य उद्घाटित किया गया है ?

जीवन के विवेकशील और अविवेकशील दोनों प्रकार के अनुभवों के रहस्य उद्घाटित किया गया है

३. मानविकी का उद्देश्य क्या है ?

विश्व में बौद्धिक -आद्ध्यामिक संवेदनाओं के संसार की रचना करना है.

४. विज्ञान क्या है ?

सभी प्राकृतिक और सामजिक परिस्थितियों तथा चीज़ों का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अद्ध्यायाँ है.

५. प्राकृतिक विज्ञान से तात्पर्य क्या है ?

बाहरी प्राकृतक विश्व का वैज्ञानिक अध्ययन प्राकृति विज्ञान कहलाता है.

६. प्राकृतिक विज्ञान में जानकारियाँ कैसे जुटाई जाते है ?

विषयों के सीधे सर्वेक्षण से

७. आधुनिक जीवन के विकास में अतुलनीय योगदान किसने किया ?

आधुनिक विज्ञान ने

९. सामजिक विज्ञान माने क्या है ?

मनुष्य के सामजिक व्यवहार की व्याख्या वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर करने से मिलने वाले ज्ञान को सामजिक विज्ञान कहते है.

१० सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत कौनसी विषयों का अध्ययन होता है?

समाजशास्त्र,नृतात्वाशास्त्र,राजनीतिक विज्ञान,मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र का अध्ययन होता है.

११. प्राकृतिक विज्ञान से हमें कौनसी ज्ञान प्राप्त होता है ?

पदार्थ क्या था,क्या है और कैसा होगा का ज्ञान प्राप्त होता है.

१२. मानविकी से तात्पर्य क्या है ?

मानव की अवस्था के महत्वपूर्ण अध्ययन की विधा को मानविकी कहते है.

१३. मानविकी और सामजिक विज्ञान का अंतर क्या है ?

सामजिक विज्ञान अनुभवजन्य पद्धतियों पर आधारित है और मानविकी रचनात्मक पद्धतियों पर

१४. मानविकी में किस बात पर ध्यान अधिक दिया जाता है ?
मानवीय परिस्थितियों के अर्थ ,उद्देश्य और लक्ष्यों की भूमिका पर.

१५. ज्ञान के सटीकता किस पर आधारित है ?
वस्तुनिष्ठता पर

१६. मानवीय ज्ञान की निर्भरता किस पर आधारित है ?
प्रत्यक्ष ज्ञान पर

१७. मानविकी का ब्रुहदांश किस्से संबंधित है ?
मानवीय मूल्यों और प्रेरणाओं से

१८. तथ्य शब्द का अर्थ क्या है ?
जिसका अस्तित्व हो अथवा जो घटित हुआ हो

१९. इतिहास क्या है ?
इतिहास भूत काल का अध्ययन है

२०. तथ्य और इतिहासकार का रिश्ता क्या है ?
दोनों परस्पर पूरक है

२१. उपन्यासकार सच्चाई को कैसे प्रकट करता है ?
भावनात्मक अंदाज़ में

२२. मानविकी किस पर जोर देते है ?
अर्थ की विशिष्टताओं और उसके विकास पर

२३. मानविकी का केंद्र बिंदु क्या है ?
अपने अनुभवों के प्रतिबिम्बन से पारस्परिक चेतना का विकास करना.

२४. मानविकी किस को व्याख्यायित करता है ?
मानवीय संबंधों को

२५. साहित्य को वास्तविक विश्व का कलात्मक प्रतिनिधित्व करने वाले के रूप में न मानने वाले आचार्य कौन थे ?
प्लातो

२६ . किसी साहित्य लेखन का महत्व कैसे निर्धारित करना है ?
उसकी आनंद प्रदान करने की क्षमता के अनुसार

२७. मनुष्य में कौन कौन सी भाव अंतर्निहित है ?
मूल्य और प्रेरणा

२८. समाज का निर्माण किसका परिणाम है ?
मानवीय संबंधों का

२९. मूल्य माने क्या है ?
मानवीय आस्थाओं के समुच्चय को मूल्य कहते है

३०. मूल्यों का विनिमय कहाँ होता है ?

एक समाज या व्यक्ति समूहों के बीच

३१. विचारधारा माने क्या है ?

विचारों के समुच्चय को विचारधारा कहते है

३२. संप्रेषण का माध्यम क्या है ?

भाषा

३३. भाषा के दो अवयव क्या -क्या है ?

भाषा के वास्तविक नियम तथा अभिव्यक्ति एवं बातचीत का वास्तविक तरीका

३४. संस्कृति की क्रियाशीलता किसके माध्यम से संभव होती है ?

भाषा के माध्यम से

३५. अर्थ किसकी प्रक्रिया है ?

भाषा

३६. विमर्श माने क्या है ?

भाषा का प्रयोग और सभी अभिव्यक्तियाँ विशेष सामाजिक,राजनीतिक और आर्थिक सन्दर्भ में अवस्थित है,इस सन्दर्भ को विमर्श कहते है.

३७. संस्थानीकरण माने क्या है ?

संस्थानीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें आदतें,रिवाज़और स्थानीय तौर तरीके ज्ञान का स्रोत बन जाते है.

३८. ऐतिहासिक तथ्य अतीत कैसे उद्घाटित होते है ?

भाषा के ज़रिये

३९. राष्ट्रीय पहचान की संवेदना निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका कौन निभाते है ?

भाषा

४०. हमारी अस्मिता का निर्माण कौन करता है ?

भाषा

४१. 'हिन्दुस्तान ' शब्द में कौनसी भावना विद्यमान है ?

धार्मिकता की भावना

४२. महात्मा गांधी द्वारा चलाये गए अखबारों के नाम लिखिए.

हरिजन और यंग इंडिया

४३ . हिंदी ---- भाषाओं में शामिल है

भारोपीय

४४. अंग्रेज़ी का भाषा के तौर पर आधुनीकरण कब हुआ ?

१५वी और १६वी सदियों में

४५. सेमेटिक भाषाओं का उद्भव कब हुआ ?

अरब से दो हज़ार ईसा पूर्व

४६. २०वीम सदी के समाजों का मुख्य लक्षण क्या है?

बहुभाषावाद

४७. भाषा के नुक्सान को लोग --- मानते है

अपना नुक्सान

४८. हमारी अस्मिता का निर्माण कौन करता है?

भाषा

५०. फिल्मों में कौनिसी भाषा की प्रयोग होती है ?

सड़क छाप भाषा का

भीमरावू अम्बेदकर के नेतृत्व में

५३. औपनिवेशिक प्रशासकों ने अंग्रजी भाषा को थोपने कोनसा तर्क दिया ?

अंग्रेजी ही ज्ञान की भाषा है और यूरोपीय संस्कृति ही समानता,स्वतन्त्रता ,विकास और आधुनिकीकरण सुनिषित कर सकते है .

५४. भारत में अंग्रेजी भाषा लागू होने के कारण क्या आपात्ति हुई है ?

स्थानीय बच्चे अपनी भाषा और संस्कृत से दूर हो गयी

५५. राम मनोहर लोहिया ने कौनसा आन्दोलन चलाया ?

'अंग्रेजी हटाओ ', 'मात्रु भाषा लाओ ' आन्दोलन

५६. कौनसी राष्ट्र की विकास की गति अत्यंत धीमी हो जाती है ?

मातृभाषा से kate राष्ट्र की

५७. मात्रु संस्कृति को ज़िंदा रखने के लिए किसकी आवश्यकता पड़ती है ?

अपनी भाषा और अभिव्यक्ति की

५८ . प्राच्य वादी किसे कहते है ?

भाषाओं और संस्कृतियों के विशेषज्ञ को प्ररच्यावादी कहते है.

५९. भाषाओं के निर्माण कैसे होते है ?

प्रत्येक वर्ग अपने अनुभवों के आधार पर भाषाओं का निर्माण करता है

६०. अस्मिताओं का निर्माण कैसे होता है ?

भाषाओं की

Unit 4

संक्षिप्त उत्तर लिखिए

१. मानविकी के कितने अनुशासन है ?

1. प्राचीन ग्रन्थ व शास्त्र
2. साहित्य और भाषाएँ
3. दर्शनशास्त्र
4. धर्मशास्त्र
5. इतिहास एवं दृश्यात्मक और प्रदर्शमूलक कलाएं

२. टिपण्णी लिखिए -सामजिक विज्ञान

मनुष्य के सामजिक व्यवहार की व्याख्या अथवा भविष्य वाणी जब वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर की जाती है तब उससे उत्पन्न ज्ञान को सामजिक विज्ञान कहते है। सामजिक विज्ञान के अंतर्गत समाज शास्त्र, ब्रितात्वाशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, मनोविज्ञान और अर्थ शास्त्र का अद्ध्यायाँ किया जाता है। सामजिक विज्ञान में कुछ भी स्पष्ट निर्धारित किये बगैर ही " क्या है और क्या होना चाहिए " की समस्या पर विचार किया जाता है। सामजिक विज्ञान का संबंध सामजिक पर्यावरण से है।

३. मानविकी

मानव की अवस्था के समग्रतापूर्ण अद्ध्ययन की विधा ही सामान्यतः मानविकी कहलाती है। दर्शन, भाषा तथा साहित्य को मानविकी का विषय माना जाता है। मानविकी में रचनात्मक और परिकल्पनात्मक प्रवृत्तियों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। मानविकी में विश्लेषण और विचारों के आदान -प्रदान पर जोर दिया जाता है। इस्ल्ये जीवन और दुनिया का सजीव चित्रण हमें मानविकी के अद्ध्यायाँ से हमें प्राप्त होते है। मानविकी हमें यह यहती है की दुसरे लोगों ने जीवन कैसे बिताया और जिया। हमारे जीवन में क्या महत्वपूर्ण क्या है उसके बारे में सूचना मानविकी हमें देते है। मानवीय परिस्थितियों के अर्थ, उद्देश्य और लक्ष्यों की भूमिका समचने में हमें मदद मानविकी देते है।

४. इतिहास माने क्या है ?

इतिहास अतीत या भूत काल का अद्ध्ययन है. इतिहास ,इतिहासकार और उनके तथ्यों की क्रिया - प्रतिक्रया की एक एक अनवरत प्रतिक्रिया है। अतीत और वर्तमान के बीच के एक अंतहीन संवाद है.इतिहास में वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा अतीत को प्रस्तुत करता है। कभी कभी इतिहासकार उपन्यासकार हो जाते है.इतिहास पर इतिहासकार के वैयक्तिक प्रभाव का असर पड़ सकते है।

५. रूचि,मूल्य और आस्था

रूचि सांस्क्रतिक पसंद से जुड़े हुए शब्द है। रूचि -जीवनशैली,व्यवहार आदी को दिखाते है। रुचियाँ मूल्यों से संबंधित है.मूल्य मानवीय आस्थाओं के समुच्चय है। प्रत्येक समाज को अपना मूल्य होता है और

उसका संरक्षक समाज के वयस्क व्यक्ति ही होते है व्यस्क लोग मूल्यों को संयोजित करते है और दूसरों तक पहुंचाते है सामाजिक स्वीकृत मूल्यों से जुडी रहती है मूल्यों का विनिमय समाजों के बीच होता है प्रायः पुरस्कार प्राप्त करने योग्य चीज़ों,स्थितियोनादी ही मूल्य बन जाते है नैतिक मूल्य उन आस्थाओं के समुच्चय है ,जिनके माध्यम से समाज में व्यक्ति के द्वारानैतिक विचारों को विकसित किया जाता है

६. टिपण्णी लिखिए भाषा

भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है,भाषा यथार्थ का दर्पण नहीं है.मगर यह हमारे लिए यथार्थ को निर्मित करती है.हमारी पहचान बनाती है.भाषा अपनी संरचना खुद स्थापित करती है.भाषा के उपयोग करने वालों को भिन्नताओं के अंतर मानकर इस्तमाल करना पडेगा.भाषा के किसी भी शब्द की जड़ें उस समाज में धसी रहती है.शब्दों के अर्थ का निर्धारण सन्दर्भ विशेष के अनुसार लेना पडेगा अर्थ भाषा की प्रक्रिया है भाषा और उसकी अर्थवत्ता का संबंध वर्ग,विचारधारा जैसे स्थितियों से है किसी भी भाषा का विकास उस देश और उसकी जनता द्वारा इस्तमाल की जाने वाली भाषा की ऐतिहासिक पहचान से संबंदित है भाषा के नियमों का संहिताकरण व्याकरण में किया गया है समय के साथ भाषा में भी बदलाव आ जाती है

अस्मिता से तात्पर्य क्या है ?

अस्मिता या पहचान लगातार बदलती विषय स्थितियों के समुच्चय है हमारी अस्मिताएं लिंग, वर्ग, राष्ट्रीयता जैसे सांस्कृतिक सन्दर्भों पर आधारित है अस्मिता हमारी व्यक्तित्व में छिपी हुई है अस्मिताओं का निर्माण भाषाओं की वजह से होती है अस्मिता हमें नाम ,पहचान और अर्थवत्ता प्रदान करते है हमें जो अस्मिता मिली हुई है उसी के आधार पर हम व्यवहार करते है अस्मिता सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों में लगातार अन्वेषित हो रही है

विस्तृत उत्तर लिखिए - भाषा

भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है किसी भी व्यक्ति की वैश्विक दृष्टी के निर्माण में भाषा ही मुख्या भूमिका निभा रहा है। भाषा के द्वारा रचे गए अर्थों के समुच्चय को हम दुनिया के साथ बाँट देते है। भाषा यथार्थ का दर्पण नहीं है, मगर वह हमारे लिए यथार्थ का निर्माण करते है। हमारी पहचान बनाती है।

अस्मिताओं का निर्माण भाषाओं की वजह से होती है। भाषा ही सब चीज़ों को परिभाषित करते है। किसी भी चीज़ का भिन्न परिभाषाये हो सकते है। इसका कारण सामजिक और सांस्कृतिक वातावरण में होनेवाले बदलाव ही है। संस्कृति की क्रियाशीलता भाषा के माध्यम से ही संभव होते है। प्रत्येक देश को अपनी अपनी संस्कृति होती है। उस संस्कृति में प्रत्येक शब्द को विशिष्ट अर्थ भी होते है। मगर वही शब्द दूसरी संस्कृतिवाले देश में जाने पर उसका अर्थ बिलकुल बदल जाते है। अर्थात भाषा का प्रयोग और सभी अभिव्यक्तियाँ विशेष सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सन्दर्भ में अवस्थित है।

के अनमोल बातों का ज्ञान हमें भाषा के माध्यम से ही मिलेंगे। राष्ट्रीय पहचान का निर्माण का कार्य भाषा ही करते है। भाषा का विकास उस देश और उसकी जनता द्वारा इस्तमाल की जानेवाली भाषा की ऐतिहासिक पहचान से संबंधित है।

भाषा का असर रोजमर्रा के जीवन पर पड़ते है। समय के साथ भाषाओं मड़ते है। समय के साथ भाषाओं में भी बदलाव ज़रूर आयेंगे। मातृभाषा के अलावा अन्य भाषाओं की जानकारी आज एक अनिवार्य अंग हो चुकी है। बहु भाषावाद बीसवीं सदी के समाजों के मुख्यस लक्षण हो चुके है। सांस्कृतिक अनेकता, जनसंख्या परिवर्तन आदि से संबंध है। भाषा में किसी वर्ग, जाती, वर्ण और लिंग की प्रवृत्ति समाहित रहते है।

Module III

व्याख्या और वर्णन

- व्याख्यात्मक संवाद की प्रक्रिया का चित्र
- क्या है व्याख्या ?
- वास्तविकता और वर्णन
- विचार की व्याख्यात्मक तरीका
- व्याख्यात्मक विचार का उद्देश्य
- साहित्य में व्याख्या
- दर्शनशास्त्र में वर्णन
- इतिहास में व्याख्या
- टेकस्चुअलिटी एवं रीडिंग

व्याख्या और वर्णन

व्याख्या किसी व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति से किसी अवसर पर किसी उद्देश्य से यह कहना है कि कुछ घटित हुआ है । यह किसी घटना, चरित्र और क्या हुआ का एक क्रमिक अंदाज में वर्णन है । यहाँ यह सिलसिला किसी क्रमवार घटना का कारण या प्रभाव से हो सकता है । व्याख्या बोलने का एक तरीका है । इस तरह व्याख्या एक संवाद है । व्याख्या या व्याख्याशास्त्र वह तरीका या साधन है जिसमें कोई संवाद होता है ।

व्याख्यात्मक संवाद की प्रक्रिया का चित्र

असली लेखक → समाहित लेखक → व्याख्या करनेवाला →

व्याख्या सुननेवाला → समाहित पाठक → असली पाठक

क्या है व्याख्या

1. शब्द, ध्वनि, चित्र और संकेत के चिन्हों को किसी खास क्रम में इस्तेमाल करना वर्णन या व्याख्या है ।
2. ध्वनि, चित्र, संकेत और संबन्धों के इस्तेमाल से हमारा कुछ रचना और व्याख्या करना भाषा के बारे में ध्वनि शब्द संकेत सभी का इस्तेमाल ।

1960 से लेखन और अभिव्यक्ति के तरीकों पर विचार करना शुरू किया । इतिहास की सामग्री, मानव विज्ञान और दर्शन शास्त्र का अध्ययन ऐसा किया गया जैसे उस पर बातें कर रहे हो। बातचीत की शैली से तात्पर्य यहाँ व्याख्या, परिकल्पना, साक्ष्य और तर्क से है । इन सभी को मिलाकर वर्णन कहा जाता है। इसी कारण 1960 के समय को व्याख्या का दौर कहा गया है।

वास्तविकता और वर्णन

कुछ विज्ञानों के अनुसार वास्तविकता हमारी चेतना के ज़रिए तंत्रात्मक संयोजनों का शारीरिक काम है । हम जो भी देखते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं वह हमारे सांस्कृतिक तत्वों से प्रभावित होता है ।

व्याख्यायें वास्तविकता का ही वर्णन है । इसकी स्वीकार्यता सामाजिक परंपराओं और व्याख्या के अभ्यास से संबन्धित है । अन्य शब्दों में वास्तविकता --संवाद, व्याख्या, स्मृति, इतिहास, आत्मकथा, कहानी, विज्ञापन, भाषण आदि विविध रूपों में हमारे सामने आते हैं । वर्णन में वास्तविकता के रूप निम्नलिखित हैं ।

१. नकल या प्रतिरूपता

यूनानी दार्शनिक प्लेटो और अरस्तु ने सबसे पहले नकल संबन्धी विचार को प्रस्तुत किया था । प्लेटो के अनुसार कवि जब पलंग का वर्णन करता है तो वह वास्तविक पलंग नहीं है । प्लेटो के अनुसार यह उस पलंग का प्रतिरूप है जो स्वर्ग में रखा है । बढई पलंग को वास्तविक रूप के करीब होकर बनाता है, क्योंकि वह पलंग को असल में तैयार करता है । लेकिन कवि का पलंग वास्तविकता से दूर रहता है, क्योंकि कवि उसको बनाते नहीं है । प्लेटो ने कहा है कि कवि जितना अच्छा होगा पलंग भी वास्तविकता के उतने ही करीब होगा ।

अरस्तु ने इस तर्क में परिवर्तन किया है । उनका सुझाव है कि कवि का काम सिर्फ नकल करना नहीं है बल्कि वास्तविक में सुधार करना है ।

२. डाइजेसेस

इसको अकसर प्रतिरूपता का उलटा माना जाता है । किसी उपन्यास या कहानी में लेखक हमें सीधे घटना का वर्णन करके यह दर्शाता है कि किसी चरित्र के बारे में लेखक क्या सोच रहा है । इस वर्णन को माइमेसिस कहते हैं । कभी-कभी परोक्ष रूप में भी वर्णन होता है । व्याख्या या वर्णन करनेवाला हमें कहानी सुनाता है । उस कहानी के पात्रों के बारे में सोचने को हमें विवश कर देते हैं । इसमें वर्णन करना लेखक का दायित्व है और सच को ढूँढना पाठक का काम है । इस तरह के वर्णन को डाइजेसेस कहते हैं । डाइजेसेस परोक्ष वर्णन है और माइमेसिस प्रत्यक्ष वर्णन है । डाइजेसेस में सोचकर अनुमान लगाना पाठक का दायित्व है ।

विचार की व्याख्यात्मक तरीका

विचार की प्रक्रिया ने हमेशा वैज्ञानिकों और विचारकों को सम्माहित किया है । मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और कैसे कल्पना करता है ? सांस्कृतिक मनोवैज्ञानिक जेरोम एस ब्रूनर के अनुसार सोचने के दो मुख्य तरीके होते हैं -- १. तार्किक - वैज्ञानिक, २. वर्णनात्मक ।

तार्किक-वैज्ञानिक तरीके में हम यदि, तब, कारण और प्रभाव के क्रम में देखते हैं । उदाः राजा मर गया और राणी भी उसके दुःख में मर गयी । यहाँ प्रभाव का क्रम बन गया है ।

वर्णनात्मक या व्याख्यात्मक तरीके में इसी घटना को इस तरह रखा जाता है कि, राजा मरा और फिर रानी भी मर गई । यहाँ स्पष्ट रूप में कारण और प्रभाव के बीच में कोई संबन्ध नहीं है । रानी की मौत राजा की मौत का नतीजा थी यह नहीं बताया गया है ।

व्याख्यात्मक विचार का उद्देश्य

१. व्याख्यात्मक विचार का उद्देश्य सत्य स्थापित करना नहीं है बल्कि इसमें भावनाओं और समानताओं पर विचार होता है ।

२. यह प्रणाली तर्क और विवेक से काम नहीं करती बल्कि संबन्धों पर चलती है । सार्वभौम सत्य, विशिष्ट परिस्थिति और अनुभव से इसका कोई संबन्ध नहीं है ।

३. इसमें विरोधाभासों का स्थान है ।

४. व्याख्यात्मक प्रणाली की जड़ें संदर्भ में हैं ।

साहित्य में व्याख्या

साहित्यिक गद्य में काल्पनिक घटनायें होती हैं । वर्णन या व्याख्या कथानक और घटनाओं के क्रम से मिलकर होता है। वर्णन की इस प्रक्रिया को डाइजेसेसे (कहानी सुनाना) कहते हैं। साहित्य में व्याख्या के लिए तीन मुख्य केन्द्र होते हैं, जो लेखक, गद्य और पाठक हैं ।

साहित्य में लेखक अपने लेखन में कुछ प्रारंभिक नोट देते हैं ताकि कहानी की भौगोलिक स्थिति समझ सकें । इसमें यह सूचना भी होता है कि रचना क्यों हुई ? किताब के तथ्यों के आधार पर हम लेखक की एक कल्पना रच लेते हैं, जिसे समाहित लेखक कहते हैं । उपन्यास और कहानी कहनेवाला या वर्णन करनेवाला उपन्यासकार या कहानीकार कहा जाता है । कहानी का वर्णन करनेवालों को तीन भागों में विभक्त किया गया है ।

१. ऐसा वर्णनकर्ता जो कहानी से बाहर है उसे हेट्रो डाइजेटिक वर्णनकर्ता कहते हैं । यहाँ घटना को बस बाहर से भगवान की तरह देखना मात्र उनका काम है ।

२. कहानी में जब वर्णनकार नहीं होते तो उसे हेट्रो डाइजेटिक इट्रा डाइजेटिक वर्णन कहलातीहैं।

३. लेखक खुद कहानी का पात्र होकर वर्णन करता है उस वर्णनकर्ता को होमो डाइजेटिक कहते हैं। होमो डाइजेटिक वर्णनकार अपनी आपबीती ऐसे सुनाता है जैसा वह कोई आत्मकथा हो।

साहित्यिक वर्णन

साहित्यिक वर्णन की संरचना के बारे में अध्ययन करने का पहला प्रयास रूस में हुआ। साहित्यक वर्णन के दो रूप हैं ।

१. फेबुला (Story)

फेबुला में घटनाओं का क्रम मात्र रहता है । उससे कोई विशेष अर्थ नहीं निकलते हैं। उदाः राजा की मृत्यु हो गई । रानी मर गई । राज्य ढह गया ।

२. सुजेठ (Plot)

सुजेठ वह रीति है जिसमें घटनाओं को ऐसे क्रम में रखे जाते हैं जिससे उसका कोई विशेष अर्थ निकले ।

उदाः राजा की मृत्यु हो गयी, राणी दुःखी थी, इसलिए वह भी मर गयी । दोनों की मृत्यु होने से साम्राज्य में कोई नेतृत्व नहीं रह गया और राज्य ढह गया ।

पृष्ठभूमि के आधार पर घटनाओं का कलात्मक प्रस्तुतीकरण साहित्य में होती है । पृष्ठभूमि के आधार पर लोककथाओं में सात तरह के पात्रों को देख सकते हैं ।

१. हीरो
२. नकली हीरो
३. खलनायक
४. सहायक
५. राजकुमारी
६. राजकुमारी का पिता
७. दूत

दर्शनशास्त्र में वर्णन

दर्शनशास्त्र संबन्धी गद्य में वर्णन का उपयोग हमेशा आत्मसंवेदन, पहचान, समुदाय और राजनीति पर विचार के लिए होता है । दर्शनशास्त्रीय गद्य में रोचक रूप में वर्णन होता है । नैतिक मूल्य, अस्तित्व और आत्मसंवेदना जैसे तत्वों को अकसर वर्णनात्मक शैली में की जाती है । दर्शनशास्त्र और वर्णन के संबन्ध का अध्ययन दो स्तरों पर हो सकता है ।

१. वर्णन पर आधारित दर्शनशास्त्र (जिसे दर्शनशास्त्रीय वर्णन कहते हैं)
२. दर्शनशास्त्र के विभिन्न प्रकार का वर्णन जिससे मानव जीवन के अस्तित्व और सत्य को समझ सकते हैं ।

दर्शनशास्त्र में दर्शनशास्त्र अपने तत्वों की व्याख्या के लिए वर्णन का उपयोग और विश्लेषण करता है । दर्शनशास्त्र वाक्पटुता का दर्शन या भाषण की कला है ।

इतिहास में व्याख्या

अतीत अथवा वर्तमान की घटनाएँ अपना वर्णन स्वयं नहीं कर सकता । उन्हें कहानी की रूप में प्रस्तुत करना पड़ता है या आवश्यक रूप से आख्यान या व्याख्या करके प्रस्तुत करता

है । अतीत की वास्तविकता क्या थी, उसका यथार्थ कैसे था यह वर्तमान को तभी उपलब्ध हो पाता है जब वह हमारे सामने किसी निश्चित रूप में प्रस्तुत किया जाता है । १८५७ के सिपाही व्रिदोह को आज समझने के लिए हमें १८५७ की घटनाओं की पुनर्रचना करनी पड़ेगी । पुनर्रचना की यह प्रक्रिया उस समय के स्रोतों, पुस्तकों, भौतिक वस्तुओं, इमारतों के अवशेषों आदि के माध्यम से ही संभव है । वर्तमान समय में अतीत की घटनाओं पर क्रमबद्ध अध्ययन करना पड़ता है । क्रम तोड़ने से ऐतिहासिक घटनाओं का अर्थ भी भिन्न रहेगा । इस प्रकार वर्तमान और भविष्य को अतीत से सही रूप में जोड़ने के लिए इतिहास में प्रभावशाली व्याख्या पद्धतियों का प्रयोग करना आवश्यक है । अतीत की घटनाओं के संप्रेषण करने के लिए तीन प्रमुख रीतियाँ हैं ।

१. एनल मोड (तिथिवार पद्धति)

इसमें इतिहास की प्रमुख घटनाओं को सूचीबद्ध करके वर्णित किया जा सकता है, जैसे १६०० में ईस्ट इंडिया कंपनी के गठन से लेकर १९४७ में भारतीय स्वाधीनता तक संपूर्ण घटनाओं को सूचीबद्ध करके इस पद्धति द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । तिथिवार क्रम में घटनाओं को सूचीबद्ध कर दिया जाता है ।

२. क्रोनिकल मोड (इतिवृत्तात्मक पद्धति)

इसमें पूर्व घटित वास्तविक घटनाओं का विवरण तो होता है लेकिन वे आधे-अधूरे किस्से होते हैं । इतिवृत्तात्मकता घटनाओं का वह विस्तृत विवरण है जहाँ कथा अपने बृहद रूप से अपने केन्द्रीय विषय वस्तु के रूप में व्यवस्थित होती है ।

३. हिस्टोरिकल नैरेटिव (ऐतिहासिक आख्यान)

अतीत की घटनाओं के वर्णन की तीसरी शैली में घटनाओं की जानकारी इस प्रकार दी जाती है कि हमारे भीतर उनके बारे में और अधिक जानकारी पाने की उत्कंठा जागे । वास्तविक घटनाएँ और यथार्थ ऐसे प्रस्तुत किए जाएँ कि वह हमें प्रभावित कर सकें और उनका कोई अर्थ निकाल सकें । इसे ऐतिहासिक आख्यान कहते हैं ।

४. टेकस्चुअलिटी एवं रीडिंग (पाठोपादेयता एवं पठन)

आख्यान ऐसा प्रस्तुतीकरण है जिनकी पाठक को व्याख्या करनी होती है । इस दृष्टि से आख्यान की प्रक्रिया में लेखक, पाठ और पाठक शामिल तत्व हैं । यहाँ पाठ की प्रकृति तथा पाठक को समझने का प्रयास किया जा रही है ।

टेक्स्चुअलिटी (पाठोपदेयता)

पाठ को परंपरागत रूप से पूर्ण माना जाता है । यह संपूर्ण होता है और समझदार पाठक ही इसका पूर्ण अर्थ ग्रहण कर पाता है । नव समीक्षकों का कहना है कि अर्थ तो पाठ में ही निहित होता है और उसका अर्थ खोजने के लिए उसके बाहर झाँकने की आवश्यकता नहीं है । लेकिन १९७० के दशक में आलोचक यह कहने लगे कि साहित्यिक आख्यानों का अस्तित्व सुसंबद्ध अथवा निश्चित नहीं है । सच तो यह है कि पाठ परंपरा से उधार लेता हैं। फ्रांसीसी आलोचक रोलां बार्थ का कहना है कि किसी रचना के अनंत पाठ संभव है । उसकी भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ की जा सकती है । बार्थ कहते हैं कि पाठ का अर्थ तो पाठक की समझ पर निर्भर करता है । द डेथ ऑफ द ऑथर निबन्ध में तो उन्होंने लेखक की मृत्यु की घोषणा ही कर दी है । पाठ का न तो कोई केन्द्र होता है न ही सीमाएँ । परिणामस्वरूप पाठ के अर्थ असीमित हैं और पाठक की क्षमता के अनुरूप फैलते हैं । उनका कोई अंतिम, एकमात्र अथवा सत्य अर्थ नहीं होता ।

बार्थ कृति एवं पाठ में अंतर करते हैं । कृति भौतिक मुद्रित पुस्तक है, पाठ उसमें संग्रहीत आख्यान है । पाठ असीमित और अनंत होने के कारण पाठ के स्वरूप निम्नलिखित हैं ।

१. समापनातीत

२. अंतहीन

३. अन्य पाठों से निर्मित

पाठक

उपनयास लेखन हाड-मांस के व्यक्ति के द्वारा किया जाता है, उसे लेखक कहते हैं । उपन्यास में निहित कहानी का आख्यान किसी कथावाचक द्वारा किया जाता है । लेकिन कथावाचक कथा का वर्णन किसके लिए करता है ? पाठ में श्रोता भी निर्मित किया जाता है जिसे कथा सुनाई जाती है । श्रोता या पाठक वह व्यक्ति है जो मूल पाठ को औपचारिक रूप से ग्रहण करता है । पाठक एक निर्मिति है । वह कृति का एक अदृश्य अंग है । ऐतिहासिक अथवा वास्तविक पाठक वह है जो पाठों का उन्हीं अर्थों में अध्ययन करता है ।

Module IV

भारतीय दर्शन में ज्ञान की सैद्धांतिकी

- भारतीय दर्शन प्रणालियों का उद्भव एवं विकास
- भारतीय दर्शन के विभिन्न कालखंड
- आस्तिक और नास्तिक
- भारतीय दर्शन के विविध संप्रदाय
- ज्ञान क्या है ?
- ज्ञान एवं प्रमा
- ज्ञान का स्वरूप
- ज्ञान का वर्गीकरण
- भारतीय परंपरा में ज्ञान की अवधारणाएं
- ज्ञान तार्किकता का सिद्धान्त
- भारतीय ज्ञान प्रणालियों की विभिन्न पद्धतियाँ

भारतीय दर्शन प्रणालियों का उद्‌भव और विकास

Philosophy के लिए भारत में दर्शन शब्द का व्यापक प्रयोग होता है । दर्शन शब्द का आर्विभाव दृश शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है देखना । दर्शन हमें परम सत्य की ओर ले जाते हैं । भारतीय संदर्भ के विविध दर्शन हमें मुक्ति की ओर चलने की प्रेरणा देते हैं ।

भारतीय दर्शन का उद्‌भव वेदों में माना गया है। इसको हम प्राचीन साहित्य के रूप में मानते हैं। लेकिन उनकी रचना क्यों हुआ, उसका क्या प्रभाव रहा यह सब तय करना संभव नहीं है। भारतीय दर्शन की विभिन्न अध्ययन शाखाओं के विकास और कालक्रम का निर्धारण करना भी कठिन काम है। क्योंकि, हमारे पास उपलब्ध जानकारियाँ न तो अत्यंत सूक्ष्म हैं और न क्रमबद्ध। प्राचीनकाल में ऐतिहासिक विवरण तथा जीवन सत्यों को सुरक्षित रूप में रेखांकित नहीं किया गया था। इसके लिए दो कारण हो सकते हैं ।

१. भारतीयों की दृष्टि में दर्शनशास्त्रियों से ज़्यादा दर्शन प्रमुख था । इसलिए इस समय विचारकों से संबन्धित विवरण पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया ।

२. भारतीय परंपरा में मौखिक रूप में ज्ञान को हस्तांतरित करने की प्रचलित प्रणाली थी । शिक्षक अपने शिष्यों को मौखिक रूप में ज्ञान सुनाया करते थे । इस गुरुकुल परंपरा के कारण यथोचित लेख, प्रमाण आदि नहीं तैयार किया गया था ।

लेकिन ऐतिहासिक लेख-प्रमाणों की कमियों के बावजूद भी भारतीय दर्शन को समझने की हमारी क्षमता पर कोई विशेष असर नहीं पड़ा है । इस यथार्थ को भारतीय दर्शन तथा यूरोपीय दर्शन की तुलना करके समझा जा सकता है ।

यूरोपीय दर्शन अपने वर्तमान प्रणालियों की खामियों के बीच से विकसित हुए हैं। इसमें एक तरह की कालानुक्रमिक विकास हम देख सकते हैं । ऐसी प्रणाली में सटीक कालक्रम का ज्ञान होने से ही विविध प्रणालियों की क्रम को समझ सकते हैं । क्रम को समझने से पिछली प्रणाली की जगह नई प्रणाली के स्थापित हो जाने का विवरण मिलता है । यूरोपीय दर्शन का विकास इस प्रकार कालक्रम के साथ होकर संभव हो पाया है । इसमें एक प्रणाली को जाने बिना अगली प्रणाली पर जाना असंभव सा हो जाता है ।

लेकिन भारतीय दर्शन की अधिकतर प्रणालियाँ साथ-साथ विकसित हुई है । प्रणालियों में एक दूसरे की आलोचना निहित है । यूरोपीय दर्शन में किस प्रकर एक प्रणाली के बदले दूसरी आती है, उसके विपरीत भारतीय दर्शन में एक के स्थान पर किसी अन्य प्रणाली स्थापित नहीं हुई थी । किसी निर्धारित प्रणाली के भीतर नये दार्शनिकों ने अपने पूर्ववर्तियों के तर्कों को सही ठहराने

तथा उन्हें और पुष्ट करने में अपनी क्षमता और शक्ति को लगाई । एक के बदले नयी प्रणाली स्थापित करना उनका लक्ष्य नहीं था । पुराने के साथ कुछ जोड़कर और कुछ तोड़कर एक सुव्यवस्थित नयी प्रणाली की स्थापना करना उनका काम था, जो मूल से पूर्ण रूप से भिन्न न हो । नये रूप और भाव से बने गये प्रणाली को, और उससे जुड़े नये वादों को इन विचारकों ने अपने तर्कों से सही ठहराने का प्रयास किया । इस प्रकार सभी मूल प्रणालियाँ शताब्दियों तक साथ-साथ मौजूद रहीं । भारतीय संदर्भ में प्रणालियों के इतिहास को न सुरक्षित रखा, लेकिन उनके दर्शन को अवश्य सुरक्षित रखा गया है । भारतीय दर्शन के किसी विशेष अध्ययन शाखा के विकास में अन्य प्रणालियों का प्रभाव दर्शनीय हैं । भारतीय दर्शन में विचारों की निरंतरता पाया जाता है । इसलिए किसी विशेष काल के प्रणाली को जाने बिना भी अगले कालखण्ड के दर्शन संबन्धी विचारों पर आलोचना करना संभव हो जाता है । इसलिए समय संबन्धी कोई विशेष सूचना भारतीय दर्शन के अध्ययन में महत्व नहीं रखती हैं ।

भारतीय दर्शन के विकास का आरंभिक चरण स्पष्ट नहीं है । हम अधिकतर संप्रदाय के उद्‌भव को ई. पू. ६०० और ई.पू १०० अथवा २०० के बीच के समय में मानते हैं। लेकिन विविध संप्रदायों के समय के संबन्ध में कई वाद-विवाद हुए हैं। क्योंकि किसी न किसी समय में यह सभी प्रणालियाँ एक साथ दिखाई देती हैं । जैन दर्शन का उद्‌भव बौद्ध दर्शन से भी पहले माना जाता है । लेकिन बौद्ध दर्शन का भौतिकतावाद जैन दर्शन में भी पाया जाता है । इसी तरह सांख्य, योग, मीमांसा और वैशेषिक प्रणालियों के तत्वों को भी जैन और बौद्ध दर्शन के पहले पाया जाता है । न्याय एवं वेदांत की प्रणालियों के इतिहास के बारे में भी अधिकृत रूप में कुछ भी नहीं कहा जाता । कुल मिलाकर भारतीय दर्शन में विचार की नौ अध्ययन शाखाएँ हैं । उनके विकास की कुछ तिथियाँ उपलब्ध हैं जिससे विचारकों की कालावधि एवं क्रम निर्धारित करना संभव है ।

भारतीय दर्शन के विभिन्न कालखंड

डॉक्टर राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन के विभिन्न कालखंडों को निम्नलिखित रूप में विभक्त किया है ।

१. वैदिक काल (ई. पू १५०० से ई.पू ६००)

यह कालखंड आर्यों की उपनिवेश और उनके विस्तार का प्रतीक है । उपनिषदों की रचना से पहले के इस काल में दर्शन का कोई ठोस अस्तित्व देख नहीं सकता । डॉ. राधाकृष्णन इस समय को दर्शन के प्रारंभ काल के रूप में मानते हैं । वह कहता है कि, यह अन्वेषण का युग है और अन्धविश्वास तथा विचार के बीच में संघर्ष चल रहा था ।

२. पुराण काल (ई. पू ६०० से २०० ईसवी तक)

इस काल में उपनिषदों और दर्शन की विभिन्न पद्धतियों का विकास हुआ। इस समय में रामायण और महाभारत के ज़रिए ईश्वर और मानव के संबन्धों का चित्रण है। बौद्ध, जैन, वैष्णव धर्मों की जड़ें भी इसी काल में हैं। भारतीय दर्शन शाखा में विभिन्न दर्शन चिन्तन इसी काल की देन है।

३. सूत्र काल (२०० ईस्वी से)

यह काल विभिन्न दर्शनों से संबन्धित साहित्य में तीव्र गति से आये विकास का समय रहा । इसी काल में सूत्र के रूप में विभिन्न साहित्यों का उदय हुआ । इन सूत्रों को समझने के लिए टिप्पणी की अवधारणा पैदा हुई । पिछले समय में जहाँ विद्वान दार्शनिक पहलुओं पर चर्चा कर रहे थे, वहाँ इस काल में दार्शनिक समस्याओं को समझने में मानव मस्तिष्क की क्षमता पर चर्चा हुई थी।

४. भाष्य काल (२०० ईस्वी से)

यह काल पिछले से विशेष रूप से पृथक नहीं है । इस काल में कुमारिल, शंकर, रामानुज, श्रीधर, माधव, वाचस्पति, उडयन, भाष्कर, जयंत, विज्ञानभिक्षु और रघुनाथ जैसे अनेक विद्वान हुए । अनेक वाद विवाद एवं कई मूल्यवान ग्रन्थों की रचना भी हुए । साहित्य का कार्य केवल शास्त्रार्थ में हुआ था । इस काल में सिर्फ शंकर और रामानुज जैसे विद्वानों द्वारा विकसित आध्यात्मिक पथ एकमात्र उपलब्धि रहा ।

आस्तिक और नास्तिक

भारतीय दर्शन में नौ विचार पद्धतियाँ दर्शनीय हैं । इन पद्धतियों को परंपरागत तौर पर दो विभागों में बाँटा गया हैं ।

१. आस्तिक

२. नास्तिक

यह वर्गीकरण वेदों में विश्वास रखने के आधार पर किया गया है । वेद को माननेवालों को आस्तिक और न माननेवालों को नास्तिक कहा गया है ।

चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शन नास्तिक वर्ग में आते हैं । क्योंकि वे वेदों को नहीं मानते हैं । बौद्ध और जैन धर्मों के अपने-अपने अलग ग्रन्थ हैं । अन्य छः दर्शन आस्तिक है । क्योंकि वे

प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में वेदों के प्रभुत्व को स्वीकारते हैं । मीमांसा और वेदान्तः पूर्णतः वेदों पर निर्भर हैं । वैदिक परंपरा को भी मानते हैं । मीमांसा में वेदों के महत्व पर ज़ोर दिया गया है । जबकि सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक दर्शन पूर्ण रूप में वेदों को नहीं मानते हैं । लेकिन अपने सिद्धान्तों और वेदों के बीच एक तादात्म्य स्थापित किया है ।

भारतीय दर्शन के विविध संप्रदाय

भारतीय दर्शन व्यवस्था में नौ संप्रदाय दर्शनीय हैं ।

१. भौतिकतावाद या जड़वाद (Materialism)

यह संप्रदाय चार्वाक दर्शन भी कहलाता है । यह नाम इसके मुख्य प्रवर्तक चार्वाक ऋषि पर आधारित है । इसे लोकायत या जनता का दर्शन भी कहा जाता है । यह संप्रदाय केवल पदार्थ को ही (तत्व) मानते हैं ।

भौतिकतावादी दार्शनिक सिर्फ चार शाश्वत तत्वों को ही मानते हैं । यह तत्व हैं पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु । सभी वस्तुओं को इन्हीं तत्व के रूप में मानते हैं । चेतना जैसी आध्यात्मिक अवधारणा (concept) को भी संपत्तिक (matter) के तौर पर देखते हैं । इस दर्शन के अनुसार इन्हीं चार तत्वों के निश्चित अनुपात (मात्रा) में संयोग से शरीर बनाया गया है । उनके समस्त दर्शन उनके ज्ञान के सिद्धान्त पर बना हुआ है । इसमें प्रत्यक्ष ज्ञान को ज्ञान का एकमात्र श्रोत माना है । यह दर्शन ईश्वर, आत्मा, आकाश जैसे अवधारणा को नहीं मानते हैं । क्योंकि इनका अनुभव करना प्रत्यय (perception, इन्द्रीय ज्ञान) द्वारा संभव नहीं है ।

चार्वाक दर्शन में इच्छाओं की वरीयता है । क्योंकि वह विश्व को ही एक मात्र सत्य मानते हैं, जिसका हमारे मृत्यु के बाद दुबारा अनुभव करना संभव नहीं हैं । यह संप्रदाय इन्द्रियों का अधिकतम उपयोग पर विश्वास रखते हैं । चार मानवीय मूल्य -- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से वे सिर्फ काम को ही मुख्य मानते हैं । अर्थ को काम को पाने में एक साधन मात्र माना गया है ।

इस दर्शन का कोई प्रारंभिक विवरण अब तक नहीं मिला है । इस संप्रदाय के बारे में हमें जो भी जानकारियाँ मिली हैं, वह पुस्तकों से या अन्य संप्रदायों से है ।

२. जैन दर्शन

इस धर्म दर्शन को वास्तविकतावादी, सापेक्षतावादी, बहुलवादी और नास्तिक जैसे विशेषणों से वर्णित किया जा सकता है । जैन दर्शन इन्द्रियानुभव, अनुमान और साक्ष्य को ज्ञान के साधन मानते हैं । इन सभी को मिलाकर स्यादवाद या ज्ञान के सापेक्षता का सिद्धान्त बनाया

गया है। इनके अनुसार वास्तविकता के अनेक रूप हैं । मानव ज्ञान सापेक्ष है और उन सभी को समाहित नहीं किया जा सकता। इसलिए हमारा निर्णय हमेशा परम स्वीकृत या अस्वीकृत नहीं हो सकते, बल्कि सापेक्ष होते है। जैसे किसी विशेष बिन्दु से अनन्त को एक ही बार देखा जा सकता है। इससे संबन्धित सिद्धान्त को अनेकांतवाद या वास्तविकताओं का सिद्धान्त कहा गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार वास्तविकता कभी बदलते है, कभी नहीं।

जैन संप्रदाय सभी तत्वों को आत्म और अनात्म (जीव और अजीव) में विभक्त करता है। ये दोनों अपने आप में भिन्न होते हुए भी स्वतंत्र और सत्य है । अजीव पाँच प्रकार के हैं ।

१. काल या समय
२. आकाश या अंतरीक्ष
३. धर्म या गति
४. अधर्म या विश्राम
५. पुदगल या तत्व, पदार्थ

जैन यह मानते हैं कि इस विश्व के सभी जीव वस्तुओं में आत्मा है । कर्म आत्मा को शरीर से जोड़ता है । सही आस्था (विश्वास), सही ज्ञान, सही आचरण (स्वभाव, व्यवहार), शरीर (तत्व) को आत्मा से अलग करते हैं। अंत में आत्मा को मुक्ति मिलती है । जैन धर्म में अनुशासन (discipline) की पाँच स्तरीय प्रणाली है ।

१. अहिंसा (non-violence)
२. सत्य (truth)
३. आस्तेया (non-stealing)
४. ब्रह्मचर्य
५. अपरिग्रह (renunication - त्याग करना)

इन प्रणालियों का पालन जैन भिक्षु कठोरता से करते हैं । जैन धर्म दर्शन ईश्वर को नहीं मानते हैं । फिर भी यह एक नीतिपरक संप्रदाय है ।

३. बौद्ध दर्शन

यह संप्रदाय बुद्ध के आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद सामने आया और इसी की माध्यम से धर्म प्रचार भी करने लगे । मौखिक तौर पर इसका प्रचार किया था । ऐसे करने पर भी उनके तीन मुख्य विद्धान्त आज भी सुरक्षित है । इनमें से पहला सिद्धान्त कतवरी आर्य सत्य या चार आर्य सत्य है । इस सिद्धान्त में कहा गया है कि,

१) यहाँ दुःख है

२) दुःख का कारण है ।

३) दुःख को समाप्त किया जा सकता है

४) दुःख दूर करने के लिए पथ है ।

दूसरा सिद्धान्त है, प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धान्त । यह दूसरे और तीसरे आर्य सत्य से संबन्धित है । इसमें कहा है कि, विश्व में जो भी घट रहा है उसका कारण है और इसलिए वह नश्वर है । बुद्ध मानते थे कि कष्ट या दुःख, उपेक्षा (Ignorance) के कारण होते हैं । यह उपेक्षा हमें जन्म और मृत्यु के चक्र में ले जाते हैं । ज्ञान पाने से ही इस चक्र से मुक्ति मिल सकती है । दुःख दूर करने के लिए आठ पथ हैं ।

१. शुद्ध विचार (Right views)

२. शुद्ध निश्चय या संकल्प (Right determination)

३. शुद्ध भाषण (Right speech)

४. शुद्ध आचरण (Right conduct)

५. शुद्ध रोजगार (Right livehood)

६. शुद्ध उद्यम (Right endeavour)

७. शुद्ध मस्तिष्क (Right mindfulness)

८. शुद्ध ध्यान (Right concentration)

बौद्ध दर्शन प्रत्ययों और अनुमानों को शुद्ध ज्ञान का साधन मानते हैं । यह साक्ष्य पर भी विश्वास रखता है । इसकी सीमा अनीश्वरवाद से लेकर प्रत्यक्ष वास्तविकतावाद तक है । बौद्ध दर्शन की कई शाखायें हैं, जिनमें हीनयान और महायान प्रमुख हैं ।

४. न्याय दर्शन

न्याय दर्शन की स्थापना गौतम ऋषि द्वारा किया गया था । यह वैशेषिक दर्शन से मिलते-जुलते दर्शन संप्रदाय है । दोनों के विचारों में कई समानतायें हैं, और थोड़े मतभेद भी हैं । वैशेषिक दर्शन के ज्ञान, मीमांसा और तर्क संबन्धी अंश न्याय दर्शन में मिलते हैं । न्याय दर्शन में परमाणुवादी बहुलता और तार्किक वास्तविकतावाद प्रमुख हैं। इसमें कहा गया है कि, वास्तविकता की अज्ञान के कारण आत्मा बन्धन में पड़ी हुई है । इस कष्ट से मुक्ति के एक मात्र रास्ता ज्ञान प्राप्त करना है । इनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के लिए चार (४) मार्ग हैं ।

१. प्रत्यय (Perception)

२. अनुमान (Inference)

३. तुलना (Comparison)

४. साक्ष्य (Testimony)

इसमें ब्रह्मांड को वास्तविक मानते हैं । ब्रह्मांड को सोलह (१६) भागों में विभाजित किया है । इस दर्शन में कार्य-कारणवाद का सिद्धान्त प्रमुख हैं । ब्रह्मांड के सभी वस्तुएँ परमाणु के संयोजन से बने हुए हैं । यह वस्तुएँ शाश्वत हैं और एक रूप में स्थित है । हर वस्तु में ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए इसमें कई तर्क दिये गये हैं । न्याय दर्शन में मुक्ति को आनन्द नहीं बल्कि कष्ट और दु:ख की स्थिति माना गया है ।

५. वैशेषिक दर्शन

इसकी स्थापना कणाद ऋषि ने की थी । इसके ज़्यादातर विचार न्याय दर्शन के समान हैं । न्याय दर्शन के समान इसमें मुक्ति के लिए वास्तविकता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । वैशेषिक दर्शन में वास्तविकता को सात (७) भागों में विभाजित किया है ।

१. वस्तु (Substance)
२. गुणवत्ता (Quality)
३. क्रिया (Action)
४. विशेषता (Particularity)
५. सामान्यीकरण (Generality)
६. समवाय (Inherence)
७. अस्तित्वहीनता (non-existence)

इसमें मन को परमाणु मानता है और आत्मा को शाश्वत और परिवर्तनशील । वैशेषिक दर्शन में प्रत्ययों और अनुमानों को प्रमाणों की तौर पर मान्यता दी है । इसमें मौखिक साक्ष्य को मान्यता नहीं है ।

६. सांख्य संप्रदाय

यह कपिल ऋषि की निरपेक्ष वास्तविकता पर आधारित है । यह प्रकृति और पुरुष जैसे दो स्वतंत्र पारस्परिक निरपेक्ष वास्तविकता पर विश्वास करता है । इनके अनुसार पुरुष प्रतिभाशाली है । यह आत्मा है, जो शरीर, संवेदना और मस्तिष्क से अलग है । यह विश्व में हो रहे सारे परिवर्तन का साक्षी है पर अपने आप में शाश्वत है । और परिवर्तन के लिए स्वयं तैयार नहीं, पुरुष वह है जो प्रकृति के उत्पादों का आनन्द उठाता है ।

दूसरी तरफ प्रकृति अचेतन और शाश्वत है । विश्व का पहला सिद्धान्त यह है कि, प्रकृति लगातार परिवर्तनशील है, और पुरुषों के भोग के लिए बनी है । यह सत्व, रज और तमस इन तीनों गुणों का मिश्रण है । प्रकृति में हमेशा संतुलन रहती है । प्रकृति का संतुलन पुरुष के निकट आने से टूट जाता है । इस दुनिया में जो भी है तीन गुणों का संयोजन है ।

सांख्य दर्शन में प्रत्यय, अनुमान और साक्ष्य को प्रमुखता दी गई है । आस्तिक होकर भी कभी-कभी सांख्य संप्रदाय अनीश्वरवादी है । इनके अनुसार ज्ञान हमें मुक्ति नहीं दिला सकता, पर मुक्ति के रास्ते पर ले जा सकता है । यह रास्ता आध्यात्मिक प्रशिक्षण और योगाभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है ।

७. योग

इसकी स्थापना पतंजलि ने की थी जो सांख्य दर्शन से जुड़े हुए थे । इसलिए इसमें सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों की मान्यता है । सांख्य दर्शन सैद्धान्तिक है, और योगाभ्यास पर आधारित है । विवेकपूर्ण ज्ञान मुक्ति के लिए आवश्यक है और इसे योगाभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है। योगाभ्यास एक अनुशासन है जो भारत में प्राचीन काल से चला आ रहा है । सांख्य दर्शन से जुड़े रहने पर भी अपने कुछ विशिष्ट दर्शन को विकसित करने का प्रयास इसमें हुआ है । योग के अन्तर्गत चित्तवृत्तिनिरोध या सभी कार्य से मुक्ति के बारे में कहा गया है । इसका उद्देश्य गलत रास्ते से आत्मा की रक्षा करना है । योग अपने सिद्धान्तों के ज़रिए नहीं बल्कि अपने आसनों के कारण जाना जाता है । योग के अभ्यास के लिए आठ चरण हैं । इसमें आत्मा और बाह्य शुद्धि, आत्मानुशासन, शारीरिक चुस्ती और ध्यान पर ज़ोर दिया गया है । योग से चेतना और मानसिक शक्ति का विकास होता है । योग के आठ चरण यह है कि,

१. यम
२. नियम
३. आसन
४. प्राणायाम
५. प्रत्याहार
६. धारण
७. ध्यान
८. समाधि

योगाभ्यास करने से मुक्ति प्राप्त होती है । पाँच यम में असत्य भाषण, चोरी, गलत जीविका, लालच, धन आदि से दूर रहने की बात कही गयी है । पाँच यम हैं,

१. अहिंसा
२. सत्य
३. अपरिग्रह
४. अस्तेय
५. जितेन्द्रियता

नीतिबोध पर आधारित इस संप्रदाय में ईश्वर के अस्तित्व को माना है ।

८. मीमांसा

इसकी स्थापना जैमिनी ने की थी । इसका मुख्य उद्देश्य वेदों में वर्णित कर्मकाण्ड का समर्थन करना है । इसमें कहा गया है कि वेद बिना त्रुटियों से बना हुआ है और शाश्वत है । इसलिए वेदों की सत्ता को बिना किसी शंका से मान लेना चाहिए । इसके अनुसार वेद और कर्मकाण्ड को न माननेवालों को मृत्यु के बाद मुक्ति नहीं मिलेगी । इसमें विश्व और आत्मा को वास्तविक माना है । आत्मा को अमर कहा गया है और ईश्वर को इसमें कोई स्थान नहीं हैं । वेदों का ही विकास के रूप में इसे मीमांसा कहा गया है ।

९. वेदान्त

इसको वेदान्त इसलिए कहते है कि यह वेदों का ही अंत को सूचित करता है । वेदान्त दो शब्द वेद और अंत को मिलाकर बनाया गया है, जिसका अर्थ है वेदों का अंत । इस संप्रदाय का प्रारंभ वहाँ से है, जहाँ वेद समाप्त हो जाते हैं । वेदान्त का आधार उपनिषद, गीता और ब्रह्मसूत्र

हैं । वेदान्त में अभी भी व्याख्या के लिए संभावना है । दार्शनिक अद्वैतवाद को वेदान्त की प्रतिनिधि मानते हैं, क्योंकि वेदान्त भी एकात्मवाद पर विश्वास करता है । यह दुनिया को परम सत्य नहीं मानते है । प्रत्यक्ष जान, अनुमान, तुलना, साक्ष्य, परिकल्पना और अबोधगम्यता पर वेदान्त विश्वास करते हैं ।

ये सारे के सारे नौ संप्रदाय आपस में जुड़े हुए हैं । एक संप्रदाय को दूसरे संप्रदाय से मिले आलोचना के आधार पर नए सिद्धान्त बनाये रहे, और दूसरों को चुनौती देने के लिए स्वयं नए सिद्धान्तों की सृजन भी होने लगी । इसी कारण से एक संप्रदाय को सही रूप में जानने के लिए दूसरों को भी समझना अनिवार्य हो जाता है ।

ज्ञान क्या है ?

इस प्रश्न का सीधा-सादा उत्तर देना संभव नहीं है कि ज्ञान क्या है ? इसका उत्तर विभिन्न प्रकार में हो सकते हैं । ज्ञान कैसे है ? जैसे प्रश्न और ज्ञान यह है जैसे उत्तर के विविध रूप हमारे सामने आ जाते हैं । मैं किसी को जानता हूँ, अथवा चूते हुए नल ठीक करना जानता हूँ या मुझे मालूम है कुछ बिल्लियाँ काली हैं । इनमें से हरेक ज्ञान का उदाहरण है, पर उनमें से प्रत्येक में भेद है । पहले में परिचय, दूसरे में कौशल या क्षमता तीसरे में एक सत्य कहा गया है । ज्ञान का सिद्धान्त तीसरे उदाहरण से संबन्धित है, ज्ञान का सिद्धान्त सत्य या प्रस्तुत ज्ञान पर आधारित है । प्रस्तुत ज्ञान विश्वास की एक प्रकार माना जाता है । पश्चिमी दर्शन के अनुसार ज्ञान में सत्य, न्याय और सर्वसम्मति होना ज़रूरी है ।

ज्ञान एवं प्रमा

सामान्यतः लोगों की धारणा यह है कि ज्ञान शब्द का अर्थ सभी प्रकार के बोध से है कि क्या सही है और क्या गलत है । इसमें हमारे सही बोध को प्रमा कहते हैं । पश्चिमी अवधारणा के अनुसार ज्ञान कुछ विश्वासों का समूह है । भारतीय अवधारणा के अनुसार प्रमा विश्वासों से नहीं बल्कि हमारे बोध से संबन्धित हैं । पश्चिमी दर्शन में गलत विश्वास को ज्ञान न कहा जायेगा । पश्चिमी दर्शन में सही ज्ञान या गलत ज्ञान नहीं है, लेकिन भारतीय दर्शन में ज्ञान की सही और गलत रूप हम देख सकते हैं । किसी वस्तु के बारे में सही जानकारी ज्ञान है उससे जुड़े गलत अवधारणा को जानना भी जानकारी ही है ।

भारतीय संदर्भ में किसी भी अवधारणा के लिए एक मात्र परिभाषा देना संभव नहीं है । हरेक दर्शन एक ही अवधारणा के लिए विविध व्याख्यायें देते हैं । भारतीय दर्शन शाखाओं ने प्रमा में सत्य की गुण को आवश्यक माना है । बौद्ध दर्शन में ज्ञान का सत्य उपयोगिता (utility) के अनुसार हैं । इनके अनुसार किसी उद्देश्य की पूर्ती करने की क्षमता रखनेवाले ज्ञान में सत्य है ।

न्याय दर्शन के अनुसार उद्देश्य की पूर्ति करनेवाला ज्ञान ही सत्य है । शुद्ध ज्ञान से किसी वस्तु में सचमुच उपस्थित गुणों के बारे में जानकारी मिलती हैं । ज्ञान और सत्य की इस परस्पर संबन्ध पश्चिमी दर्शन के तदानुरूपता सिद्धान्त के समान ही है ।

कुछ दार्शनिकों का मत है कि सत्य अनुभवजन्य होना चाहिए । उनका कहना है कि सच्चा ज्ञान वही है जो अन्य अनुभवों के अनुकूल हो । यह दृष्टिकोण पश्चिम के सामंजस्य सिद्धान्त से मिलता-जुलता है ।

वेदान्त के अद्वैत संप्रदाय में सत्य को अकाट्य माना गया है । उनके अनुसार सच्चा ज्ञान वही है जो बाद में झूठा सिद्ध न सिद्ध कर सके ।

लेकिन ज्ञान की प्रामाणिकता के लिए केवल सत्य को आधार मानना ठीक नहीं है, क्योंकि कभी-कभी सच हमारी स्मृति से संबन्धित है । स्मृति के अनुसार हम सच को पहचानते हैं । सच्चा ज्ञान या सत्य प्रमा कहा जायेगा । प्रमा कभी गलत स्थापित हो जाये यह ठीक नहीं है । स्मृति अप्रमाणिक ज्ञान है । इसे प्रमा का हिस्सा न मान लेना चाहिए । इसलिए ज्ञान सत्य होने के साथ-साथ नया और पूर्व में अज्ञात भी होना चाहिए ।

ज्ञान का स्वरूप

ज्ञान का स्वरूप क्या है ? ऐसे प्रश्न पूछने पर हमेशा समस्या आ जाती है । ज्ञान को गतिविधि, संबन्ध और गुण जैसे विविध रूप में माननेवाले हैं । इसके अनुसार ज्ञानसंबन्धी विविध सिद्धान्त हैं ।

(१) ज्ञान के कार्यसिद्धान्त के अनुसार ज्ञान एक गतिविधि या प्रक्रिया है । ज्ञान पाने के लिए एकाग्र होना ज़रूरी है । एकाग्रता के बिना व्यक्ति वस्तुओं का अनुभव नहीं कर पाता । अनुभव करने के लिए दिमाग को सक्रिय करना होगा । इस प्रकार सोचने पर ज्ञान एक प्रक्रिया या गतिविधि है।

(२) ज्ञान के अंतःसंबन्ध सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान-मस्तिष्क, वस्तु तथा अंतर्वस्तु के बीच संबन्ध है । कुछ लोग ज्ञान को मस्तिष्क और वस्तु के बीच की और कुछ लोग इसे सिर्फ मस्तिष्क से मात्र संबन्धित मानते हैं । कुछ इसे वस्तु से मात्र संबन्धित भी मानते हैं ।

(३) ज्ञान की गुणवत्ता सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान को गुण का प्रतीक माना है । लेकिन प्रश्न आता है कि यह किसका गुण है । सांख्य या योग के अनुसार बुद्धि आधार तत्व है । ज्ञान उसका गुण है। न्याय और वैशेषिका में आत्मा को मूल में मानते हैं । वेदान्त में भी ज्ञान को आत्मा का अवश्य गुण माना गया है ।

ज्ञान का वर्गीकरण

ज्ञान का वर्गीकरण करने से हमें अप्रमा अथवा अनधिकृत ज्ञान की अवधारणा मिलती है, जिसकी तालिका को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

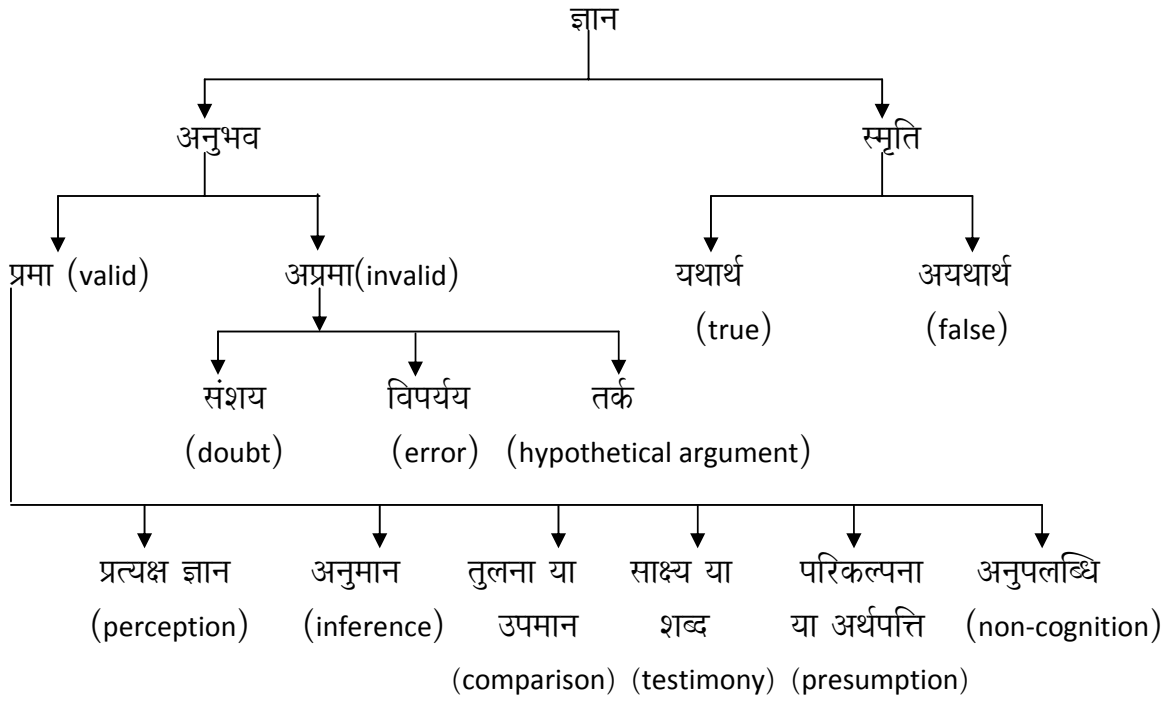

अनधिकृत या अपुष्ट ज्ञान की अवधारणायें

१. स्मृति

भारतीय ज्ञान शास्त्र में स्मृति के लिए विशेष स्थान है । यह पुष्ट या अपुष्ट ज्ञान नहीं है । स्मृति ऐसी अवस्था है जिसमें याद की गयी वस्तु हमेशा उपस्थित नहीं होते । स्मृति में वस्तु से संबन्धित पिछले अनुभव को याद करने के बाद दिमाग में उसको ले आते हैं । स्मृति में कभी वस्तुओं के यथार्थ रूप और कभी अयथार्थ रूप मिल जाते हैं ।

२. संशय

संशय होने से ही ज्ञान मिलते हैं और ज्ञान का खण्डन भी होता है । एक ही वस्तु के बारे में संशय के कारण, विविध और विपरीत मान्यतायें होने के कारण ही ज्ञानार्जन संभव हो पाते हैं । वस्तु के बारे में एक निर्णय न मिल पाने से संशय उत्पन्न हो जाता है । संशय सच्चा या झूठा ज्ञान नहीं है ।

३. विपर्यय

यह अपुष्ट ज्ञान है । विपर्यय में हम वस्तु को अव्यवस्थित या अवास्तविक रूप में देखते हैं । विपर्यय के माध्यम से वस्तुओं में कुछ गुण काल्पनिक रूप में मान लेते हैं । उदाहरण के रूप में हम रस्सी को साँप मानकर उसमें साँप के गुण देखते हैं । विपर्यय और संशय में अंतर है । संशय में अनिश्चय की स्थिति है । लेकिन विपर्यय में निश्चितता का तत्व है । वस्तु के बारे में झूठा दावा किया जाता है ।

४. तर्क

जब किसी खास मुद्दे पर दो समान रूपी युक्ति और विरोधाभासी विकल्प आ जाते हैं, तो उनकी बीच में से अनिश्चय की स्थिति को मिटाने के लिए और किसी एक को चुनने के लिए काल्पनिक तर्क का सहारा लिया जाता है । इसमें एक युक्ति को लेकर दूसरी युक्ति का विरोध किया जाता है । अंत में सत्य ढूँढ़ लेते हैं । तर्क को पुष्ट ज्ञान नहीं माना जाता, बल्कि इसे सत्य को परखने का माध्यम माना जाता है । कभी-कभी दोनों युक्ति गलत स्थापित हो जाने पर भी अंतिम निर्णय लेने की प्रक्रिया में यह सहायक बन जाते हैं ।

भारतीय परंपरा में ज्ञान की अवधारणाएं

ज्ञान के भारतीय सिद्धान्तों को जानने के लिए भारतीय दर्शन में जो ज्ञान संबन्धी परिकल्पनायें हैं, उसे सही रूप में जानना ज़रूरी है ।

१. बोध

भारतीय दर्शन में बोध के लिए महत्वपूर्ण स्थान है । किसी भी व्यक्ति में किसी भी वस्तु के बारे में कहने से या सुनने से पैदा होनेवाले चेतना को हम बोध कहते हैं । बोध को तर्क संगत ज्ञान की कसौटी पर देखना ज़रूरी नहीं है ।

२. सापेक्ष ज्ञान (relational knowledge)

सापेक्ष ज्ञान के लिए चार प्रमुख तत्व हैं ।

१. ज्ञाता (knower)
२. ज्ञेय (the object known)
३. ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया (process of acquiring knowledge)
४. परिणामस्वरूप प्राप्त ज्ञान (resultant knowledge)

इसमें व्यक्ति अथवा प्रमथ (ज्ञाता) को एक पक्ष में रखता है । दूसरे पक्ष में प्रमेय (ज्ञेय) अर्थात् वस्तु को रखता है । व्यक्ति के बिना ज्ञान संभव नहीं है । क्योंकि व्यक्ति ही बुद्धि अथवा चेतना का आश्रयस्थान है ।

३. प्रमाण

प्रत्येक दर्शन में प्रमा के लिए अलग-अलग परिभाषायें हैं । प्रमा प्राप्त करने के लिए कई मार्ग या साधन हैं । प्रमा के इन साधनों को प्रमाण कहते हैं । प्रमा सही ज्ञान होने के कारण स्मृति और प्रत्यभिज्ञा (recognition) से प्राप्त होनेवाले ज्ञान को हम नहीं मानते हैं । प्रमाणों की छह भेद हैं ।

1. प्रत्यक्ष ज्ञान (perception)
2. अनुमान (inference)
3. तुलना या उपमान (comparison)
4. शब्द या साक्ष्य (testimony)
5. परिकल्पना या अर्थापत्ति (presumption)
6. अनुपलब्धि (non cognition)

पुष्ट ज्ञान की साधना को प्रमाणों के अधिकार के आधार पर विभक्त किया गया है । हर एक प्रमाण का अधिकार के क्षेत्र किसी अन्य प्रमाण का अधिकार क्षेत्र से विशिष्ट माना गया है । इस विशिष्ट स्थिति को प्रमाण व्यवस्था कहते हैं ।

एक अन्य दृष्टिकोण से प्रमाणों के अधिकार क्षेत्र कभी परस्पर मिलते हैं और कभी अलग रहते भी नहीं है । इस दृष्टिकोण को प्रमाण संप्लव कहते हैं । बौद्ध लोग प्रमाण व्यवस्था को मानते हैं । न्याय एवं वैशेषिक प्रमाण संप्लव को मानते हैं ।

स्वतः प्रकाशवाद और परतः प्रकाशवाद

ज्ञान हमें विविध रूप में मिलते हैं । इसके संबन्ध में दो प्रमुख वाद हैं । जब कुछ जानने के लिए सकारात्मक उत्तर (positive answer) देने को स्वतः प्रकाशवाद कहा जाता है । यह सिद्धान्त ज्ञान की स्वयं प्रकट होने की क्षमता पर आधारित है । जब प्रश्न का नकारात्मक उत्तर (negative answer) देते हैं तो उसे परतः प्रकाशवाद कहते हैं । जब एक व्यक्ति कलम से परिचित है, तो उसे यह भी पता होगा कि यह कलम है और मुझे कलम का ज्ञान है । इसे स्वतः प्रकाशवाद कहते हैं । सांख्य, प्रभाकर मीमांसा तथा अद्वैत दर्शन स्वतः प्रकाशवाद को मानते हैं । उनके अनुसार ज्ञान स्वयं प्रकाशित होती है । परतः प्रकाशवादी के अनुसार ज्ञान स्वयं प्रकाशित नहीं होती बल्कि अन्य जानकारियाँ उसे उद्घाटित करती हैं । न्याय एवं भटट मीमांसा परतः प्रकाशवाद को मानते हैं ।

ज्ञान तार्किकता का सिद्धान्त

इसमें दो सिद्धान्त हैं । इसमें सिद्धान्त की तार्किकता को स्वयं सिद्ध माना गया है । उसे स्वतः प्रमाण्यवाद कहते हैं । उनकी मान्यता है कि ज्ञान के उत्पादक कारकों का योग ही ज्ञान की तार्किकता को जन्म देता है । यदि प्रमाण कमियों से मुक्त है, तो उसके परिणामस्वरूप निर्मित ज्ञान भी स्वतः सिद्ध होता है ।

दूसरी ओर परतःप्रमाण्यवाद है जो ज्ञान की बाह्य संबन्धों पर आधारित है । इसके अनुसार ज्ञान की वास्तविकता सही दृष्टि और सही प्रकाश व्यवस्था जैसी बाह्य परिस्थितियों पर आधारित हैं । सांख्य, योग, वेदान्त तथा प्रभाकर मीमांसा स्वतः प्रमाण्यवाद को मानते हैं । न्याय एवं वैशेषिक परतःप्रमाण्यवाद को मानते हैं ।

मिथ्या

विपर्यय के अन्दर मिथ्याधारणा अथवा ख्याति की अवधारणा मुख्य है । इसको अध्यास भी कहते हैं । मिथ्याधारणा स्मृति, स्वप्न आदि से भिन्न हैं । मिथ्याधारणा में वस्तु उसी प्रकार दिखता है, जैसे प्रत्यक्ष ज्ञान में दिखते हैं । यह मस्तिष्क से संबन्धित होता है । मिथ्या में बाहर से थोपा जाना अनिवार्य है । जब किसी सीपी में चाँदी का भ्रम होना मिथ्याधारणा के लिए

उदाहरण है । मिथ्याधारणा की परिकल्पना को समझना उतना आसान नहीं है । इसके संबन्ध में विभिन्न मत निम्नलिखित हैं ।

१) बौद्ध दर्शन की माध्यमिका अध्ययन शाखा का असत्ख्यातिवाद

इस वाद के अनुसार मिथ्याधारणा में असत् को ही सत् मान लिया जाता है । सीपी को देखकर चाँदी मान लिया है । इनके अनुसार सीपी भी चाँदी के समान मिथ्या है ।

२) बौद्ध दर्शन के योगाकार अध्ययन शाखा का आत्मख्यातिवाद

इनके अनुसार आंतरिक विचारों के अलावा किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं है । आंतरिक बोध के रूप में चाँदी और सीपी का चित्र मन में होने के कारण दोनों वास्तविक हैं । मिथ्या तब होता है, जब हम वस्तु को बाह्य रूप में देखते हैं ।

३) न्याय दर्शन का अन्यथाख्यातिवाद

सृष्टि में सभी कुछ वस्तु वास्तविक है । उनके अनुसार मिथ्या में किसी वस्तु को उसके वास्तविक स्वरूप को अन्य किसी रूप में समझ लिया जाता है । उदाः सीपी को देखकर चाँदी समझा जाता है ।

४) सांख्य शाखा का सदासत्ख्यातिवाद

इनका कहना है कि विभिन्न परिस्थितियों में समान वस्तु को वास्तविक तथा अवास्तविक माना जाता है । सीपी पर बाह्य रूप में थोपे जाने पर वह अवास्तविक वस्तु है, और जब सीपी को भ्रम से चाँदी मान लिया जाता है तो वह वास्तविक वस्तु है ।

५) प्रभाकर मीमांसा का अख्याति सिद्धान्त

इनका कहना है कि मिथ्या किसी वस्तुओं को गलत समझने से नहीं, बल्कि उनके बीच की भेद को न समझ पाने की कारण होती है । सीपी और चाँदी की बीच की अंतर को न समझ पाने से मिथ्या आ जाती है ।

६) भट्ट मीमांसा का विपीरतख्याति सिद्धान्त

इनके अनुसार मिथ्या केवल दो वस्तुओं के भेद को न समझ पाने से नहीं बनते हैं बल्कि दो गलत या असंबन्ध ज्ञान को एक रूप में मान लेने से होता है । सीपी तथा चाँदी की व्यक्तिगुण को भूलकर सफेद और चमकीले जैसे सामान्य गुणों के कारण सीपी की चाँदी मान लिया गया है ।

७) अद्वैत वेदांत संप्रदाय का अनिर्वचनीयख्याति सिद्धान्त

इनका कहना है कि विपर्यय का पता लगते ही चाँदी गायब हो जाती है। यह अवास्तविक चाँदी नहीं है क्योंकि यहाँ सचमुच चाँदी की धारणा पैदा हुई थी । लेकिन एक ही वस्तु (चाँदी)यथार्थ और अयथार्थ दोनों नहीं हो सकते। चाँदी यथार्थ या अयथार्थ न होकर अनिर्वचनीय है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों की विभिन्न पद्धतियाँ

भारतीय दर्शन के इतिहास से पता चलता है कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों की पद्धतियाँ एक साथ विकसित नहीं हईं। भारतीय विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से दर्शनशास्त्र बिल्कुल भिन्न है। उसमें प्रत्यक्ष निष्कर्ष अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों में व्यवस्था निर्माण

भारतीय ज्ञान प्रणालियों ने व्यवस्था निर्माण (system building) पद्धति को अपनाया है। प्राचीन काल में गुरु मुँह से सीखकर अगली पीढ़ी की ओर ज्ञान प्रसारित किया गया था । पूर्व ज्ञान को कठिन आलोचना के बाद ही नये रूप में प्रस्तुत किया गया था । इस तरह की विभिन्न पद्धतियों के कारण भारतीय दर्शनशास्त्र अकाठ्य माना जाता है । ज्ञान निर्माण की विभिन्न पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं ।

१) पूर्व पक्ष

लगभग सभी अध्ययन शाखाओं ने इस पद्धति को अपनायी है । इसमें अपने दर्शन का पूर्ण प्रदर्शन के लिए स्वयं आलोचना प्रस्तुत करता है । आलोचना इस प्रकार होती है कि कोई विरोध कर रहा हो । इसमें विपक्ष को उत्तर पक्ष कहते हैं । आलोचना के बाद अपने दर्शन को संपूर्ण और विपक्ष को अपूर्ण स्थापित किया जाता था ।

२) तर्कशास्त्र

न्याय संप्रदाय में तर्क को एक पद्धति के रूप में अपनाया गया है । इसलिए न्याय को तर्कशास्त्र भी कहते हैं । तर्क की पद्धति की आलोचना हेतु विद्या द्वारा की गई है । हेतु विद्या में प्रश्न के कारण और निवारणों का परीक्षण करते है ।

३) प्रसंग

माध्यमिक बौद्धों द्वारा इस पद्धति को अपनायी गयी है । इसका प्रवर्तक नागार्जुन है । इनके अनुसार हर स्थिति के लिए दो मूल विकल्प होते हैं जैसे उसका सकार अथवा नकार ।

४) स्यादवाद

जैनों का स्यादवाद प्रसंग के एकदम विरुद्ध है। इनका कहना है कि एक स्थिति के लिए दो विकल्प संभव नहीं हैं । इनका कहना है कि हर एक निर्णय अपेक्षाकृत सत्य होते हैं । स्याद शब्द का अर्थ है सापेक्ष रूप में । इसलिए इस सिद्धान्त को निर्णय की सापेक्षता का सिद्धान्त भी कहते हैं ।